आगरा घराने की अल्प-प्रचलित चतुरंग गायन शैली का कथक नृत्य द्वारा सम्भावित विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से संगीत में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा

शोधार्थिनी

नैन्सी गुप्ता

शोध-निर्देशिका

प्रो. सुधा सहगल

संगीत विभाग (गायन)

संगीत विभाग, कला-संकाय,

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्सटीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),

दयालबाग़, आगरा-282005

2022

भूमिका-

आगरा घराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का अत्यन्त प्रचलित व प्राचीन घराना है जो अपनी विशिष्ट गायकी एवं गायन शैलियों जैसे-ध्रुपद, धमार, ख्याल, बोल-बाँट, ठुमरी, त्रिवट, चतुरंग, सादरा, दादरा के लिए अस्तित्व में रहा है। इस घराने में सभी गायन शैलियों के क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक पक्ष में विशिष्ट स्वर विन्यास, स्वर लगाव, चमत्कारिक लयात्मकता एवं लयकारियों का प्रयोग बड़ी कलात्मकता एवं सूझ-बूझ से किया जाता है। इन गायन शैलियों में से कुछ गायन शैलियाँ अत्यन्त प्रचलित हुई तथा कुछ अल्प-प्रचलित हो गई यद्यपि सभी गायन शैलियों में प्रशंसनीय रचनात्मक कार्य हुए हैं। प्रचलित गायन शैलियों में जहां एक ओर ध्रुपद, धमार, बोल-बाँट, ठुमरी, तराना तथा दादरा जैसी गायन शैलियाँ अत्यन्त प्रसिद्ध हुईं वहीं दूसरी ओर चतुरंग, त्रिवट, सादरा जैसी गायन शैलियाँ अल्प-प्रचलित हो गईं। प्रचलित गायन शैलियों को मंच प्रस्तुति के कारण प्रसिद्धि प्राप्त हुई जबकि अन्य गायन शैलियाँ प्रदर्शन के अभाव में अल्प-प्रचलित रह गई।

आगरा घराने के कलाकारों ने अप्रचलित गायन शैलियों में से चतुरंग पर भी वृहद रूप से रचनात्मक कार्य किये हैं किन्तु मंच प्रस्तुतियों के अभाव में वे अधिक प्रकाश में न आ सके। यह गायन शैली मुख्यतः ग्वालियर घराने से प्रभावित शैली है। इसमें भाव पक्ष की अपेक्षा कलापक्ष पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसमें लघु बोल-बनाव, सृजनात्मक बोल-बाँट, लघु-तानों व बहलावे का प्रयोग किया जाता है। यह गायन शैली एक आकर्षक व चमत्कृत गायन शैली है।

जैसा कि नाम से ही विदित है चतुरंग अर्थात् चार अंगों वाला। अतः इसमें चार अंग, चार गायन शैलियों का परिचय देते है ये गायन शैलियां इस प्रकार हैं-

1. ख्याल 2. तराना

3. सरगम 4. तबला या पखावज की छोटी परन

चतुरंग गायन शैली के प्रथम भाग में गीत के शब्द, द्वितीय भाग में तराने के बोल, तृतीय भाग में विशिष्ट राग की सरगम एवं चतुर्थ भाग में मृदंग व पखावज के बोलों की परन का गायन किया जाता है।

चतुरंग नामक गायन-शैली द्रुत लय प्रधान गायन शैली है। इसमें छोटे-छोटे बहलावों का प्रयोग किया जाता है। यह मुख्यतः ग्वालियर घराने से प्रभावित गायन शैली है। इस गायन शैली में भाव की अपेक्षा कला-पक्ष पर अधिक ध्यान आकर्षित किया जाता है।

"चतुरंग" एक विशिष्ट अर्थपूर्ण एवं विशेष सृजनजन्य शैली है जिसमें ख्याल की कल्पनाशीलता, तराने की विविधता, सरगम की नवीनता व पखावज/ तबले या नृत्य के बोलों का अनूठायन है। यह गायन शैली वर्तमान समय यदा-कदा ही गायन शैली की भाँति प्रयुक्त होती है। आगरा घराने के कई विद्वान कलाकारों ने यद्यपि अनेक चतुरंग रचनाओं का सृजन किया है किन्तु वे रचनाएं कम ही प्रकाश में आईं है।

जैसा कि विदित है कि कथक नृत्य शैली शताब्दियों से जीवन्त रही है। कथा कहने की नृत्य व भावपूर्ण प्रणाली कथक नृत्य शैली के अतिरिक्त कोई और नहीं हो सकती। इस नृत्य शैली में सलामी, आमद, टुकड़े, चक्करदार टुकड़े, परन, चक्करदार परन, गतनिकास, तिहाई का निर्वाह बहुत कलात्मक, रचनात्मक व सौन्दर्यपूर्ण ढंग से किया जाता है। वर्तमान समय में इस शैली में कई नवीनताएं दृष्टव्य हुई हैं जैसे गायन शैलियों का सामंजस्य, समसामयिक विषयों का प्रयोग व एकल से बहुलता प्रधान मंच प्रस्तोताओं को वरीयता। अतः कथक नृत्य ने वर्तमान समय में विभिन्न सम्भावनाओं को जन्म दे दिया है। यह नृत्य शैली मंच-प्रस्तुति के धरातल पर विभिन्नताओं को खोजती है तथा चतुरंग गायन शैली तो स्वयं विभिन्नताओं की सौन्दर्यपूर्ण आकृति है। अप्रयुक्तिकरण के चलते इसे यदि कथक नृत्य शैली से जोड़ कर दोनों शैलियों में नवीन सम्भावनाओं का सृजन किया जाए तो अप्रत्याशित रूप से रचनात्मक व क्रियात्मक परिणाम मिलने की आशा है, ऐसा शोधकर्त्री का मानना है क्योंकि शोधकर्त्री स्वयं गायन की छात्रा है साथ ही साथ कथक नृत्य में विशेष रूचि होने के कारण शिक्षित भी है अतः आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली को कथक नृत्य शैली का आधार प्रदान कर चतुरंग को पुनः जीवन्त किया जा सकता है साथ ही साथ कथक नृत्य के अन्तर्गत भी घरानेदार रचनाओं का समावेश दोनों शैलियों को नवीनता की ओर अग्रसर करेगा तथा इसी नवीनता के कारण आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली के विकास की सम्भावना आश्चर्यजनक रूप से बढ़ सकती है।

आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली व कथक नृत्य पर गहन अध्ययन करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है-

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः

पुस्तकें

- "कथक नृत्य शिक्षा- भाग1 एवं 2"; दाधीच, डॉ. पुरु, बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर, वर्ष- 1981
- "कथक नृत्य" गर्ग लक्ष्मी नारायण, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष-1981
- "नटवरी (कथक) नृत्य माला"; विक्रम सिंह, स्टारप्रेस, लखनऊ, वर्ष-1984
- "आगरा घराना परम्परा, गायकी और चिजें", मेहता रमणलाल, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स सेल्स यूनिट, बड़ौदा, द्वितीय आवृति, मार्च-1993
- "कथक के प्राचीन नृतांग"; रघुवीर, गीता, Publication Scheme, Jaipur, वर्ष-2000
- "आधुनिक व्यवसायिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन परम्परा"; शर्मा डॉ. जीतराम, जे. एम. डी. हाउस, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, वर्ष 2004
- "आगरा व जयपुर घराने की विशिष्ट बन्दिशें"; चौधरी डॉ. नुपुर राय, राज पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली, वर्ष-2007
- "कथक नृत्य शैली में प्रयुक्त गायन की विशिष्ट विधाएँ"; त्रिवेदी-डॉ. आम्रपाली, अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष-2016

शोध प्रबन्धः-

- "धमार गायन शैली का धार्मिक सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन"; शर्मा लक्ष्मी, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष-2007
- "आगरा घराने के संदर्भ में तराना गायन शैली"; कौशिक सोनल, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2013

लघु शोध प्रबन्धः-

- "आगरा घराने में गाये जाने वाले विशिष्ट रागों एवं बन्दिशों का अध्ययन" बाला रेनू, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2010
- "आगरा घराने की बोलबाँट ठुमरी- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"; शर्मा चंचल, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष-2013
- "आगरा घराने की सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन" सत्संगी अर्षा, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष-2015
- "आगरा घराने में निर्वाहित एक ताल की बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"; सत्संगी अर्षा, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2018
- "आगरा घराने में व्यवहृत धुरपद गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन"; आधारी दरश, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2018
- "आगरा घराने में व्यवहृत धमार गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन"; आधारी दरश, दयालबाग़ एजूकेशलन इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2019

शोध पत्रः

- "ध्रुपद धमार दुर्लभ सांस्कृतिक धरोहर", जैन विशाल, संगीत कला बिहार, अंक 3- अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, 2010
- "घरानों का संगम", मिश्रा पं. श्यामदास, संगीत कला बिहार, अंक 8- अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, 2011

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् शोधकर्त्री द्वारा पाया गया कि आगरा घराना, चतुरंग गायन शैली व कथक नृत्य पर पृथक-पृथक पठनीय सामग्री विभिन्न प्रकार से प्राप्त होती है जैसे आगरा घराने के इतिहास, गायन शैली व रचनाओं से सम्बन्धित "Aesthetics of Agra and Jaipur Traditions",

"कथक नृत्य शैली में प्रयुक्त गायन की विभिन्न विधाएँ" जिनमें वर्णित आगरा घराने का ऐतिहासिक परिचय आंशिक रूप से प्रस्तावित शोध व रचनाओं से सम्बन्धित "आगरा घराने की विशिष्ट बन्दिशें" पुस्तकें प्राप्त होती हैं जिनमें चतुरंग गायन शैली पर अल्प मात्रा में सामग्री उपलब्ध है किन्तु आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली पर कोई पुस्तक प्राप्त नहीं होती। प्रो० रमण लाल मेहता द्वारा लिखित पुस्तक "आगरा घराना परम्परा, गायकी और चिजें" में यत्र-तत्र दो या तीन चतुरंग रचनाओं को दिया गया है। इसके अतिरिक्त किसी भी पुस्तक में आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली की बन्दिशें प्राप्त नहीं होती। श्रव्य सामग्री के नाम पर तो आगरा घराने की ये रचनायें सुप्तावस्था में ही हैं।

आश्चर्य है कि कथक नृत्य के साथ आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली पर समन्वित रूप से कोई सामग्री पुस्तक, शोधप्रबन्ध, शोधपत्रों के रूप में प्राप्त नहीं होती तथा किसी भी प्रकार का लघु शोध-प्रबन्ध भी इन विषयों पर संचालित नहीं हुआ। यहाँ तक कि समाचार पत्रों के सम्पादकीय व अन्य विशेषांकों में भी इन विषयों पर कोई कार्य नहीं हुआ है।

अतः सर्वथा नवीन व मौलिक आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली को कथक नृत्य के समन्वयात्मक पक्ष के साथ जोड़कर दोनों शैलियों को विकासोन्मुख करने की दृष्टि से शोधकर्त्री द्वारा निम्न विषय का चयन किया गया है-

विषय कथनः

"आगरा घराने की अल्प-प्रचलित चतुरंग गायन शैली का कथक नृत्य द्वारा सम्भावित विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

प्रस्तावित शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याः-

घराना-

- (सं.पुं.एक.व.) वंश, खानदान; कुल आदि

- वर्धा हिन्दी शब्दकोश-श्री राम प्रकाश सक्सेना

- (सं.हि.पु.) वंश, कुल

- आदर्श हिन्दी शब्दकोश-पं. रामचन्द्र पाठक

चतुरंग-

- (सं.पु.)1 चतुरंगिणी सेना के चार अंग-पदाति, अश्व, गज, और रथ आदि

- वर्धा हिन्दी शब्दकोश- राम प्रकाश सक्सेना

- (सं. पुं.) एक प्रकार का चलता गाना, सेना के चार अंग; यथा- हाथी, घोड़ा, रथ, और पैदल, शतरंज का खेल आदि

- आदर्श हिन्दी शब्दकोश- पं. रामचन्द्र पाठक

गायन शैली-

- स्त्रीलिंग (संगीत गायन) गायन विधा का पूरा ज्ञान, गाने की क्रिया या भाव

- लोक भारती प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश- आचार्य रामचंद्र वर्मा

- (स्त्रीलिंग) गाने की उच्च कला, गाने का पेशा, गाने का तरीका

- मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश- कृष्णकान्त दीक्षित (राष्ट्रपति पुरस्कार)

- (संज्ञा, गायन (पुं.) शैली (स्त्री) गाने की क्रिया या ढंग

- भाषा शब्दकोश- डॉ. रामशंकर शुक्ल, रसाल

कथक-

- (सं.) (सं. स्त्री.) उत्तर भारत की एक शास्त्रीय नृत्यशैली, कथक

- वर्धा हिन्दी शब्दकोश-राम प्रकाश सक्सेना

- (हि. पुं.) एक जाति विशेष के लोग जो नाचते गाते हैं; नृत्य-(पुं.) कथकों में प्रचलित एक नृत्य

- आदर्श हिन्दी शब्दकोश- पं. रामचन्द्र पाठक

विकास-

- (सं.) (सं-पु.)1 फैलना; बढ़ना2 उन्नति; प्रगति; अभिवृत्ति आदि

- वर्धा हिंदी शब्दकोश- राम प्रकाश सक्सेना

- (सं.पुं.) विस्तार, फैलाव, पुष्प आदि का खिलना, क्रमशः उन्नति करना

- आदर्श हिन्दी शब्दकोश- पं. रामचन्द्र पाठक

उद्देश्य-

1. आगरा घराने के इतिहास, विकास व्यवहृत गायन शैलियों व वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली का इतिहास, विकास एवं रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना
3. विभिन्न चतुरंग रचनाओं के आधार पर कथक नृत्य के कला प्रधान पक्षों को विभिन्न रागों व तालों में सम्बद्ध करना।
4. कथक नृत्य के विभिन्न कलात्मक पक्षों द्वारा आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली को प्रस्तुतियों के माध्यम से विकसित करना।
5. आगरा घराने के चतुरंग एवं कथक कलाकारों से साक्षात्कार करना।
6. चतुरंग गायन शैली में स्वनिर्मित स्वरलिपिबद्ध रचनाओं का निर्माण करना।

अध्ययन की आवश्यकता-

जैसा कि विदित है चतुरंग एक अल्प-प्रचलित गायन शैली है। अतः इस गायन शैली को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। आगरा घराने के विद्वान कलाकारों ने यद्यपि इस गायन शैली में कई रचनात्मक कार्य किये हैं तथापि यह गायन शैली उजागर न हो सकी। कथक नृत्य के विभिन्न पक्षों के साथ इस गायन शैली का समन्वयात्मक रूप अधिक स्पष्ट व मुखर हो सकेगा, इसी आशा से यह अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

यद्यपि चतुरंग गायन शैली ग्वालियर घराने की विशेषता है किन्तु आगरा घराने में भी चतुरंग गायन शैली पर वृहद् कार्य हुआ है जिसे प्रकाश में लाने की आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्व-

प्रस्तावित शोध का महत्व इसके अन्तर्गत आने वाले विभिन्न तत्वों में निहित है यथा आगरा घराने का विशिष्ट महत्व, चतुरंग गायन शैली में अनेक रचनाएं, विभिन्न रागों व तालों में निबद्ध सर्वथा मौलिक स्वरलिपियां, कथक नृत्य का ठोस आधार, कथक में होने वाले अनेक सृजनात्मक पक्षों का संयोजन, दोनों शैलियों में आधारभूत विभिन्नता के बावजूद रचनात्मक समानता। यदि देखा जाए तो, प्रस्तावित शोध तीन विशिष्ट तत्वों के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा जिनमें "आगरा घराने" की "चतुरंग गायन शैली" को "कथक नृत्य का आधार" प्राप्त होगा और भविष्य में इस शोध के क्रियात्मक माध्यम के कारण यह गायन शैली विकसित हो सकेगी।

विषय का परिसीमांकन-

कार्य व समय की सीमा को देखते हुए शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन एवं नृत्य संचालन को पाँच एकल, दो जुगलबन्दी तथा तीन सामूहिक नृत्यों तक ही सीमित किया जाएगा।

अध्ययन के स्त्रोत-

प्रस्तावित शोध को संचालित करने हेतु विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों जैसे- दयालबाग़ शिक्षण संस्थान, आगरा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, जयपुर विश्वविद्यालय, जयपुर से सामग्री एकत्रित की जाएगी इनके अतिरिक्त उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ, संगीत नाटक अकादमी दिल्ली से भी उपयुक्त सामग्री को एकत्रित किया जाएगा। आगरा घराने एवं कथक नृत्य के विद्वान कलाकारों से चतुरंग गायन शैली एवं कथक नृत्य से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की जाएगी।

कार्यविधि व उपकरण-

प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध को संचालित करने के लिये व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। शोध उपकरणों में साक्षात्कार एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया जाएगा। सांगीतिक उपकरणों में हारमोनियम, तबला,

घुँघरू का प्रयोग किया जाएगा। सांगीतिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में इलेक्ट्रॉनिक तबला तानपुरा एवं सिंथेसाइज़र का प्रयोग किया जाएगा। यांत्रिक उपकरणों में कम्प्यूटर, लैपटॉप, रिकॉर्डिंग उपकरणों में जैसे- मोबाइल, वीडियो कैमरा का प्रयोग किया जायेगा।

अध्यायों का विभाजनः

प्रथम अध्याय

(i) आगरा घराने का इतिहास, विकास व गायन शैलियाँ

(ii) कथक नृत्य का इतिहास, विकास व विभिन्न पक्ष

द्वितीय अध्याय

(i) आगरा घराने में व्यवहृत चतुरंग गायन शैली-परिचय

(ii) आगरा घराने में व्यवहृत चतुरंग गायन शैली-विभिन्न विद्वान, कलाकार, गायक

(iii) आगरा घराने में व्यवहृत चतुरंग गायन शैली- रचनाएं

तृतीय अध्याय-

(i) आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली एवं कथक नृत्य-एक समन्वय

(ii) आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली एवं कथक नृत्य- विकास के चरण

(iii) एकल नृत्य संचालन (Choreography) एवं चतुरंग गायन शैली

चतुर्थ अध्याय

(i) जुगलबंदी नृत्य संचालन एवं चतुरंग गायन शैली

(ii) सामूहिक नृत्य संचालन एवं चतुरंग गायन शैली

पंचम अध्याय-

चतुरंग गायन शैली व कथक नृत्य के समन्वयात्मक रूप का विकास के सन्दर्भ में विश्लेषण

षष्ठम् अध्याय-

(i) विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त चतुरंग रचनाओं का संकलन

(ii) स्वनिर्मित चतुरंग रचनाएं

निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

- "कथक नृत्य"; नारायण प्रकाश, कला प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष- 1971
- "कथक नृत्य शिक्षा- भाग1 एवं 2"; दाधीच, डॉ. पुरु, बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर, वर्ष- 1981
- "कथक नृत्य" गर्ग लक्ष्मी नारायण, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष-1981
- "नटवरी (कथक) नृत्य माला"; विक्रम सिंह, स्टारप्रेस, लखनऊ, वर्ष-1984
- "आगरा घराना परम्परा, गायकी और चिजें", मेहता रमणलाल, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स सेल्स यूनिट, बड़ौदा, द्वितीय आवृति, मार्च-1993
- "कथक प्रसंग, बाजपेई रश्मि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष-1999
- "कथक के प्राचीन नृतांग", रघुवीर गीता, प्रकाशन योजना, जयपुर, वर्ष- 2000
- "कथक-अक्षरों की आरसी", बख्शी ज्योति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, वर्ष- 2000
- "कथक और अध्यात्म, गुप्ता भारती, राधा प्रकाशन, आगरा, वर्ष-2001
- "आधुनिक व्यवसायिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन परम्परा"; शर्मा डॉ. जीतराम, जे. एम. डी. हाउस, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, वर्ष 2004
- "ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य", डॉ. टाक माया, कनिष्क पब्लिषर्स, नई दिल्ली, वर्ष- 2006

- "आगरा व जयपुर घराने की विशिष्ट बन्दिशें"; चौधरी डॉ. नुपुर राय, राज पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली, वर्ष-2007
- "Indian classical gharana Tradition", Mehta R.C., Readworthyh Publications, वर्ष- 2008
- "कथक का लखनऊ घराना और पं. बिरजू महाराज", डॉ. मधुकर आनन्द, कनिष्क प्रकाशन, मध्य प्रदेश, वर्ष-2013
- "भारतीय संस्कृति में कथक परम्परा, सिंह माण्डवी, अगम कला प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष- 2014
- "कथक नृत्य शैली में प्रयुक्त गायन की विशिष्ट विधाएँ"; त्रिवेदी-डॉ. आम्रपाली, अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष-2016
- "कथक वितान", बाजपेई रश्मि, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष-2019
- "आगरा घरानाः ट्रेडीशन ग्रेट म्यूजिशयन - इन्फ्सूएन्स", डॉ. केलकर राजेश गोपालराव, राज पब्लिकेशन, दिल्ली, वर्ष- 2019

शोध प्रबन्धः-

- "धमार गायन शैली का धार्मिक सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन"; शर्मा लक्ष्मी, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष-2007
- "आगरा घराने के संदर्भ में तराना गायन शैली"; कौशिक सोनल, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2013

लघु शोध प्रबन्धः-

- "आगरा घराने में गाये जाने वाले विशिष्ट रागों एवं बन्दिशों का अध्ययन" बाला रेनू, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2010
- "आगरा घराने की बोलबाँट ठुमरी- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"; शर्मा चंचल, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष-2013

- "आगरा घराने की सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन" सत्संगी अर्षा, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष-2015
- "आगरा घराने में निर्वाहित एक ताल की बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"; सत्संगी अर्षा, दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2018
- "आगरा घराने में व्यवहृत ध्रुपद गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन"; आधारी दरश, दयालबाग़ एजूकेशलन इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2018
- "आगरा घराने में व्यवहृत धमार गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन"; आधारी दरश, दयालबाग़ एजूकेशलन इंस्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2019

शोध पत्रः

- "ध्रुपद धमार दुर्लभ सांस्कृतिक धरोहर", जैन विशाल, संगीत कला बिहार, अंक 3- अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, 2010
- "घरानों का संगम", मिश्रा पं. श्यामदास, संगीत कला बिहार, अंक 8- अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, 2011

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध "आगरा घराने की अल्प-प्रचलित चतुरंग गायन शैली का कथक नृत्य द्वारा सम्भावित विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन" की रूपरेखा निर्मित करने से पूर्व विभिन्न विद्वान कलाकारों से पूछे गये प्रष्न-

प्रश्नावली

प्रश्न 1- आगरा घराने के इतिहास के बारे में बताइये?

प्रश्न 2- आगरा घराने की गायन शैली कैसी है?

प्रश्न 3- आगरा घराने की चतुरंग गायन शैली में कितना कार्य हुआ है?

प्रश्न 4- आगरा घराने के कौन-कौन से कलाकारों ने चतुरंग गायन शैली में रचनाएं की हैं?

प्रश्न 5- चतुरंग गायन शैली के अप्रचलित होने के कारण क्या है?

प्रश्न 6- आगरा घराने की चतुरंग गायन-षैली क्यों प्रचलित नहीं हुई?

प्रश्न 7- क्या कथक नृत्य के माध्यम से चतुरंग शैली को विकसित किया जा सकता है?

प्रश्न 8- चतुरंग गायन शैली को कथक नृत्य के समन्वय से कैसे विकसित किया जा सकता है?

प्रश्न 9- इस शैली का नाम चतुरंग क्यों पड़ा?

प्रश्न 10- चतुरंग के अर्थ, गायन शैली एवं सौन्दर्य तत्वों पर प्रकाष डालिए?

प्रश्न 11- चतुरंग नामक शैली की उत्पत्ति किस प्रकार हुई?

प्रश्न 12- चतुरंग गायन शैली का स्वर्णकाल क्या था?

प्रश्न 13- चतुरंग गयन शैली को पुनः प्रचार-प्रसार में कैसे लाया जा सकता है?

प्रश्न 14- क्या कथक के माध्यम से चतुरंग गायन शैली को और प्रभावी बनाया जा सकता है?

प्रश्न 15- कथक के माध्यम से चतुरंग के विकास के क्षेत्र में क्या-क्या सम्भावनाएं हैं?

प्रश्न 16- आगरा घराने के चतुरंग रचनाकारों का विवरण दीजिये?

प्रश्न 17- कौन-कौन सी ताल में अधिकांश चतुरंग रचनाएं होती हैं?

प्रश्न 18- क्या ऋतु प्रधान चतुरंग रचनायें प्राप्त होती है?